हिन्दी

लेखनी

प्रदूषण

प्रदूषण का अर्थ है - गंदगी, अशुद्धता। प्रदूषण का अर्थ है किसी चीज को अशुद्ध बनाना। प्रदूषण हमारी धरती मां को कई तरह से नुकसान पहुंचा रहा है। प्रदूषण मुख्य रूप से तीन प्रकार का होता है- वायु प्रदूषण , जल प्रदूषण और भूमि प्रदूषण

प्रदूषण से दुनिया भर में कई तरह की बीमारियाँ फैलती हैं ,जब अशुद्ध और हानिकारक गैसें हवा को प्रदूषित करती हैं, तो उसे वायु प्रदूषण कहते हैं ।

जब दूषित पदार्थ पानी में मिल जाते हैं, तो उसे जल प्रदूषण कहते हैं।प्रदूषण मानव जीवन के लिए खतरनाक है। प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए वनों की कटाई से बचना चाहिए।अधिक से अधिक पेड़ लगाना चाहिए।

Jagrat Jangir

II-B

दो पक्षियों की कहानी

एक समय की बात है, दो छोटे पक्षी एक घने पेड़ पर रहते थे। एक पक्षी को हमेशा नकारात्मक विचार आते थे, जबकि दूसरे पक्षी का हमेशा सकारात्मक दृष्टिकोण था। नकारात्मक पक्षी अक्सर चिंता करता था, जबकि सकारात्मक पक्षी हमेशा यह मानता था कि सब कुछ अच्छा होगा। एक दिन तूफान आया और दोनों पक्षी उड़ने के लिए तैयार हो गए। नकारात्मक पक्षी डरते हुए कहा, "हमें उड़ने से पहले ध्यान रखना होगा कि कहीं कुछ गलत न हो जाए।" लेकिन सकारात्मक पक्षी ने कहा, "चलो हम अपनी मेहनत और विश्वास से सब कुछ संभाल सकते हैं।" तूफान के बाद, नकारात्मक पक्षी ने देखा कि उसने बहुत समय गंवा दिया चिंता करने में, जबकि सकारात्मक पक्षी ने अच्छा समय बिताया और खुद को सुरक्षित रखा।

सीख: जीवन में हमेशा सकारात्मक सोच रखनी चाहिए। कठिनाइयाँ आती हैं, लेकिन सकारात्मक दृष्टिकोण से हम हर समस्या को हल कर सकते हैं।

Md. Johar Nashil
IV-A

शिक्षा का महत्त्व

शिक्षा हमारे जीवन का सबसे अनमोल हिस्सा है। यह हमें नई बातें सिखाती है, हमारी सोच को विकसित करती है और हमें अच्छा इंसान बनाती है।
जब हम पढ़ाई करते हैं, तो हमें दुनिया के बारे में जानने का मौका मिलता है। गणित, विज्ञान, इतिहास और भाषा जैसे विषय हमें न केवल ज्ञान देते हैं, बल्कि हमें जीवन की समस्याओं को हल करने की समझ भी सिखाते हैं।
शिक्षा के बिना हमारा जीवन अधूरा है। यह हमें सही-गलत का अंतर समझने में मदद करती है और हमें दूसरों की मदद करने के काबिल बनाती है। एक पढ़ा-लिखा व्यक्ति न केवल अपने परिवार बल्कि पूरे समाज के लिए उपयोगी होता है।
शिक्षा हमें सपने देखने और उन्हें पूरा करने का हौसला देती है। डॉक्टर, इंजीनियर, शिक्षक या वैज्ञानिक बनने के लिए अच्छी शिक्षा की जरूरत होती है। यह हमें आत्मनिर्भर और सफल बनाती है।
लेकिन शिक्षा केवल किताबों तक सीमित नहीं है। यह हमें नैतिक मूल्य, अनुशासन और अच्छे व्यवहार भी सिखाती है। स्कूल में जो कुछ हम सीखते हैं, वह हमारे पूरे जीवन के लिए उपयोगी होता है।इसलिए, हमें अपनी पढ़ाई पर ध्यान देना चाहिए और शिक्षा के महत्व को समझना चाहिए। यह हमारे और हमारे देश के भविष्य को उज्ज्वल बनाती है।

Yashesh Harsh Udeshi

IV-A

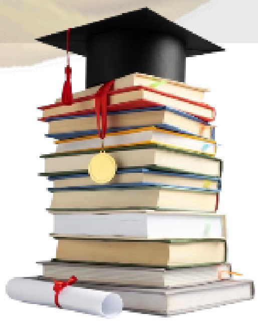

माता पिता ही पूरी दुनिया होते है

एक बार की बात है, जब शंकर जी और पार्वती जी ने गणेश जी और कार्तिक जी की परीक्षा लेने की सोची। तब उन्होंने दोनों बच्चों को पास बुलाया और कहा जो पूरी दुनिया के चक्कर पहले लगाएगा ,हम उसकी शादी पहले कर देंगे। इतना सुनते ही कार्तिक जी अपने मयूर वाहन पर बैठ कर पूरी दुनिया का चक्कर लगाने निकल पड़े। परन्तु गणेश जी अपने मूषक वाहन से दुनिया का चक्कर कैसे लगाए सोचने लगे । तभी अचानक उनके दिमाग में एक तरकीब आई । उन्होंने शंकर जी और पार्वती जी को एक शिला पर एक साथ बैठा दिया और उनकी चक्कर लगने लगे । तब शंकर जी और पार्वती जी ने पूछा वो ऐसा क्यूं कर रहे है तो गणेश जी ने कहा कि माता और पिता बच्चों के लिए पूरी दुनिया होते हैं। इसलिए मैने पूरी दुनिया का चक्कर लगा लिए। गणेश जी की बुद्धिमानी की सब तारीफ करने लगे और इसलिए गणेश जी शादी पहले हो गई।

Naman Shaw

IV-B

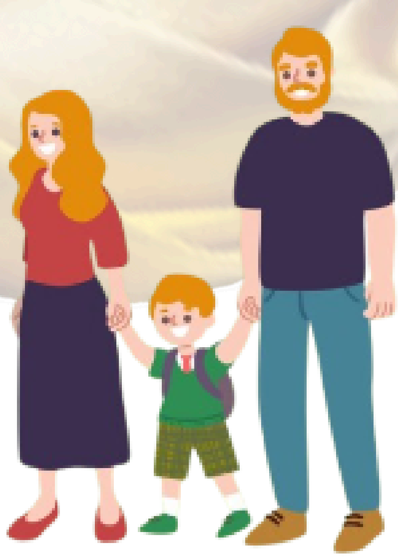

जीतने की जंग कर

राह अगर कठिन हो,
मुश्किल असीम हो,
जीतेंगे हम जरूर,
यदि खुद पर यकीन हो।

हार गया जो खुद से ही,
जीतेगा वो, दुनिया से क्या?
परास्त कर, दुश्मनों को तू,
जो मन के अंदर है बसे,
'डर' के औजार से,
खुद ही खुद को डसे।

बनना है, अगर कुछ तो,
हौसले बुलंद कर,
अपने आप से ही तू,
जीतने की जंग कर।

Pranay Mohta
V-A

मेरी माँ

पहला शब्द ,पहली अध्यापिका ,पहला विद्यालय मेरी मां |
पहली सांस ,पहली दोस्त ,पहला प्यार मेरी मां |
गलती करता हूं तो मुझे पापा से बचाती है और कोने में ले जाकर मुझे डांट लगाती है |
वो मेरी मां है जो मेरे जीवन मे ज्योत जगाती है |
मां मुझे गलत रास्ते पर जाने से रोकती है ,
मेरी शरारतों को बड़े प्यार से टोकती है ।

मां, मम्मी, अम्मा नाम अनेक हैं पर ममता सब की एक है ।
मैंने आरती देखी है,
मैंने अज़ान भी देखा है,
मेंने जन्नत तो नहीं देखी ,
मगर मैने मां ज़रूर देखी है।

Arsh Faiyaz
V - B

सफ़र का साथी

एक बार की बात है, एक छोटा सा कछुआ था। उसका नाम था 'खोलू'। खोलू बहुत अकेला रहता था। सभी जानवर उसके धीमे चलने के कारण उससे दूर ही रहते थे। खोलू को बहुत दुख होता था।

एक दिन, खोलू जंगल में घूम रहा था। अचानक उसने एक छोटे से पौधे को देखा जो बहुत दुखी लग रहा था। पौधा रो रहा था। खोलू ने पूछा, "क्यों रो रहे हो, छोटे पौधे?"

पौधे ने कहा, "मुझे बहुत अकेलापन लगता है। कोई भी मेरे पास नहीं आता। सभी जानवर मुझसे टकराकर चले जाते हैं।"

खोलू ने कहा, "मुझे भी ऐसा ही लगता है। मैं भी बहुत अकेला रहता हूं।"

तभी पौधे ने कहा, "चलो, हम दोनों साथ-साथ रहेंगे।"

खोलू बहुत खुश हुआ। उसने पौधे के पास ही अपना घर बनाया। पौधा भी खोलू के लिए छाया देता था। दोनों ने साथ-साथ खेलना, बातें करना सीखा।

धीरे-धीरे, अन्य जानवरों ने भी देखा कि खोलू और पौधा कितने खुश हैं। उन्होंने भी उनके साथ खेलना शुरू किया। जंगल में फिर से खुशियां लौट आईं।

कहानी का संदेश: अकेलेपन को दूर करने के लिए दोस्ती बहुत जरूरी है।

Saurangshu Gupta
VI-A

एक दोस्त जरूरी है

जिदंगी का सफर यू ही,
अकेले काट लोगे क्या?
अपनी खुशी और अपने गम
खुद में ही बांट लोगे क्या?

मोड़ आयेंगे जिदंगी में ऐसे कई
तब खुशी होगी थोड़ी ज्यादा ।
तब सोचोगे काश! कोई होता
जिसके साथ बांट लेते
हम खुशी को आधा।।

इस सफर में कुछ पल होंगे
जब दुख के बादलों से घिर जाओगे।
अपने आसपास देखोगे और
जिदंगी की सड़क पर
खुद को अकेला पाओगे।।

ऐसा कोई तो हो
जो तेरे रोने पर तुझे हसाएँ
जो अपनी हरकतों में
तूझे भी फंसाए।।
ऐ मेरे दोस्त
तेरी मंजिल अभी बहुत दूर है
और इस सफर को हंसकर
पूरा करने के लिए
एक दोस्त जरूरी है।।

Nitesh Jaiswal
VI-B

आत्मविश्वास

आत्मविश्वास है बहुत जरूरी ,
उसके बिना जीवन है अधूरी ।
जब तक हम अपने ऊपर करें न विश्वास ,
तब तक नहीं जागेगा हमारा आत्मविश्वास।

इसके लिए करो अपने मन में वास ,
बना दो अपने शक को एक लाश ,
अब करो अपने अंदर विश्वास
तब जागेगा आत्मविश्वास।

तुम किसी से न डरो
तुम किसी से न हारो ,
तुम उठो
और उठकर अपने लिए लड़ो।

जब तुम करोगे अपने ऊपर विश्वास ,
तब मिलेगा तुम्हें एक शक्ति खास ।
जब तुम में होगा आत्मविश्वास ,
तब होगा तुम्हें अपने जितने का
आभास।

बस रखो अपने अंदर विश्वास ,
और जाग जाएगा यह आत्मविश्वास।

Aarav Gupta
VII-A

मृत्यु: एक अनंत यात्रा

मृत्यु नहीं अंत, यह है नया द्वार,
गीता में लिखा, आत्मा है अमर, न हो लाचार।
शरीर तो नश्वर, माटी का रूप,
आत्मा सदा रहती, यह है सनातन सत्य की धूप।

यह बात सीखा है हमने पढ़कर गीता की वाणी,
नया शरीर पाकर आत्मा करे कहानी।
पुनर्जन्म का चक्र, है हमारे कर्मों का फल,
यमराज की सभा में मिलता जीवन का हल।

गरुड़ पुराण कहे, पुण्य को ढूंढों,
पाप से बचकर, धर्म का मार्ग खोजो।
स्वर्ग की सीढ़ी या नरक की उतार,
कर्मों पर निर्भर, है जीवन का सार।

मृत्यु सिखाती, जीवन का मोल,
छनभरका तो है जीवन, पर आत्मा अनंत।
जैसे दीप बुझ जाए, पर रहे प्रकाश,
वैसे ही आत्मा रहेगी,न हो हताश।

श्रीकृष्ण ने कहा, न डर मृत्यु से,
यह आत्मा का मिलन है परम सत्य से।
मृत्यु है विश्राम, एक नए जीवन का आरंभ,
सनातन धर्म का यह ज्ञान है अचंभ।

मृत्यु है यात्रा, न अंधेरा न अंत,
ध्यान में समझो, यह सत्य का मंत्र।
जीवन को अच्छे से जीओ, धर्म का करो सम्मान,
मृत्यु के बाद भी रहे सद्कर्मों की पहचान।
इसलिए न डरों मौत से,
क्योंकि यह एक नई शुरुआत है।
जलाओ दीपक और करो भक्ति,
और कर्म करके जीवन सुखद बनाओ।

Rajveer Singh

VII-A

लैंगिक समानता

लैंगिक समानता, सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, एक मानव धर्म है। इसका तात्पर्य है कि सभी वर्गों और जातियों की महिलाएँ, पुरुष, लड़के और लड़कियाँ समान रूप से भाग लेते हैं और उनका समान मूल्य होता है। उन्हें संसाधनों, स्वतंत्रता और नियंत्रण का प्रयोग करने का अधिकार प्राप्त है।विश्व आर्थिक मंच की लैंगिक असमानता रैंकिंग के अनुसार, भारत 149 देशों में 108वें स्थान पर है। यह रैंक एक बड़ी चिंता का विषय है क्योंकि यह पुरुषों की तुलना में महिलाओं में अवसरों में भारी अंतर को उजागर करता है। भारतीय समाज में लंबे समय से सामाजिक संरचना ऐसी रही है कि महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य, निर्णय लेने के क्षेत्र, वित्तीय स्वतंत्रता आदि जैसे कई क्षेत्रों में उपेक्षित किया जाता है।

किसी भी देश की समग्र भलाई और विकास के लिए लैंगिक समानता पर उच्च स्कोर करना सबसे महत्वपूर्ण पहलू है। लैंगिक समानता में कम असमानता वाले देशों ने बहुत प्रगति की है। भारत सरकार ने भी लैंगिक समानता सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाने शुरू कर दिए हैं। लड़कियों को प्रोत्साहित करने के लिए कई कानून और नीतियाँ तैयार की गई हैं। "बेटी बचाओ,बेटी पढ़ाओ योजना " (बेटी बचाओ, और लड़कियों को शिक्षित करो) अभियान बालिकाओं के महत्व के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए बनाया गया है। लड़कियों की सुरक्षा के लिए कई कानून भी हैं। हालाँकि, हमें महिला अधिकारो के बारे में ज्ञान फैलाने के लिए और अधिक जागरूकता की आवश्यकता है। इसके अलावा, सरकार को नीतियों के सही और उचित कार्यान्वयन की जाँच करने के लिए पहल करनी चाहिए।
भारत में महिलाओं के प्रति भेदभावपूर्ण व्यवहार में योगदान देने वाला एक और प्रमुख कारण विवाह में दहेज प्रथा है। इस दहेज प्रथा के कारण, अधिकांश भारतीय परिवार लड़कियों को बोझ समझते हैं।

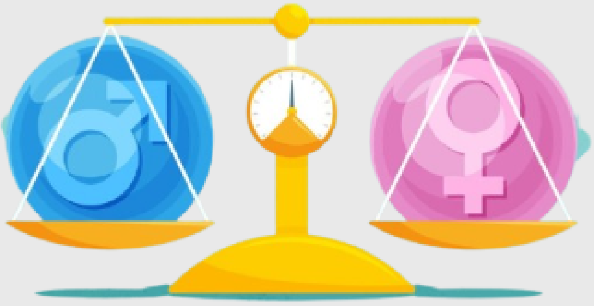

बेटों को प्राथमिकता देना अभी भी प्रचलित है। लड़कियाँ उच्च शिक्षा से दूर रहती हैं। महिलाओं को समान नौकरी के अवसर और वेतन नहीं मिलते। 21 वीं सदी में भी घर के प्रबंधन की गतिविधियों में महिलाओं को प्राथमिकता दी जाती है। कई महिलाएँ पारिवारिक प्रतिबद्धताओं के कारण अपनी नौकरी छोड़ देती हैं और नेतृत्व की भूमिका से बाहर हो जाती हैं। हालाँकि, पुरुषों के बीच ऐसी हरकतें बहुत कम होती हैं।लैंगिक समानता महिलाओं और लड़कियों के विरुद्ध हिंसा को रोकती है ।लैंगिक समानता आंतरिक रूप से सतत विकास से जुड़ी हुई है और सभी के लिए मानवाधिकारों की प्राप्ति के लिए महत्वपूर्ण है।

लैंगिक समानता का समग्र उद्देश्य एक ऐसा समाज है जिसमें महिला और पुरुष जीवन के सभी क्षेत्रों में समान अवसर, अधिकार और दायित्व का आनंद लेते हैं। पुरुषों और महिलाओं के बीच समानता तब होती है जब दोनों लिंग सत्ता और प्रभाव के वितरण में समान रूप से साझा करने में सक्षम होते हैं; काम के माध्यम से या व्यवसाय स्थापित करके वित्तीय स्वतंत्रता के लिए समान अवसर होते हैं; शिक्षा और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं, रुचियों और प्रतिभाओं को विकसित करने के अवसर तक समान पहुँच का आनंद लेते हैं; घर और बच्चों की ज़िम्मेदारी साझा करते हैं और काम और घर दोनों जगह ज़बरदस्ती, धमकी और लिंग आधारित हिंसा से पूरी तरह मुक्त होते हैं।जनसंख्या और विकास कार्यक्रमों के संदर्भ में, लैंगिक समानता महत्वपूर्ण है क्योंकि यह महिलाओं और पुरुषों को ऐसे निर्णय लेने में सक्षम बनाएगी जो उनके स्वयं के यौन और प्रजनन स्वास्थ्य के साथ-साथ उनके जीवनसाथी और परिवारों पर अधिक सकारात्मक प्रभाव डालेंगे। विवाह की आयु, जन्म का समय, गर्भनिरोधक का उपयोग और हानिकारक प्रथाओं (जैसे महिला जननांग काटना) का सहारा लेने जैसे मुद्दों के संबंध में निर्णय लेने की प्रक्रिया लैंगिक समानता की प्राप्ति के साथ बेहतर होगी हालांकि यह स्वीकार करना महत्वपूर्ण है कि जहां लैंगिक असमानता मौजूद है, वहां आमतौर पर महिलाएं ही निर्णय लेने और आर्थिक और सामाजिक संसाधनों तक पहुंच के मामले में बहिष्कृत या वंचित होती हैं। इसलिए लैंगिक समानता को बढ़ावा देने का एक महत्वपूर्ण पहलू महिलाओं का सशक्तिकरण है, जिसमें शक्ति असंतुलन की पहचान करने और उसका निवारण करने और महिलाओं को अपने जीवन का प्रबंधन करने के लिए अधिक स्वायत्तता देने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। इससे वे अपने प्रजनन और यौन स्वास्थ्य को प्राप्त करने और बनाए रखने के लिए निर्णय लेने और कार्रवाई करने में सक्षम होंगी। लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण का मतलब यह नहीं है कि पुरुष और महिला एक जैसे हो जाते हैं; केवल इतना है कि अवसरों और जीवन में बदलाव की पहुंच न तो उनके लिंग पर निर्भर करती है और न ही उससे बाधित होती है।

Yash Pal
VII-B

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को सरल शब्दों में समझे तो ,जिस तरह हम दैनिक जीवन में मोबाइल या अन्य चीजों की मदद से विभिन्न कार्यों को करते हैं।ठीक उसी प्रकार मनुष्य की तरह ही यदि किसी कार्य को पूर्ण करने में एक मशीन हमारी सहायता करती है तो इस प्रक्रिया को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंसी कहते हैं।

रोबोट वैक्यूम क्लीनर ,एलेक्सा तथा ऑटोनोमस वाहनों आदि सभी में जो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंसी प्रयोग में लाई गई है,वह इसका एक जीता जागता उदाहरण है। इस प्रकार ऐ आई किसी कार्य

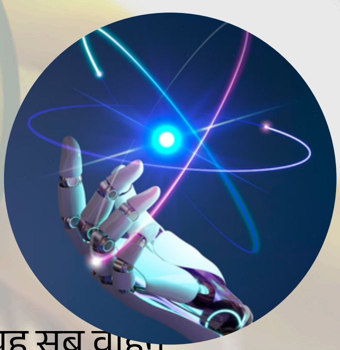

को करने में सहायता करती है जिससे मनुष्य के समय तथा ऊर्जा दोनों की बचत होती है।

जैसे पहले बताया गया कि ऐ आई द्वारा ऑटोनोमस गाडियां चलती है यह सब वाहन बिना ड्राइवर के जो रहती है यह गाड़ी सुरक्षा नियमों का पालन करते हुए यात्रियों को सही स्थान पर ले जाती है।नई ऐ आई तकनीकी विकास के द्वारा कृषि क्षेत्र में भी बहुत योगदान तथा सफलता प्राप्त हुई है। ऐ आई मशीनों द्वारा फसलों की पैदावार बढ़ाने के लिए रिसर्च तथा विकास प्राप्त हुआ है तथा फसलों की तैयारी होने के समय की भविष्यवाणी भी करती है ,कृषि की दक्षता को बढ़ाता है। ऐ आई द्वारा वर्चुअल पर्सनल असिस्टेंट द्वारा हमारे प्रश्नों का उत्तर समय से प्राप्त हो जाता है।हमारे प्रश्नों से हमें तसल्ली हो जाती है।मानव बुद्धि पर आधारित मशीन एक पीढ़ी से अधिक समय तक कार्य नहीं कर सकती।आर्टिफिशियल इंटेलिजेंसी हर समय हमारे लिए उपयोगी नहीं रहता।हर बार ऐ आई द्वारा हर काम ठीक से नहीं होता और बहुत बार घटनाएं भी हो चुकी जिससे लोगों की जान जा चुकी है। ऐ आई द्वारा लोगों में खतरे का अनुभव होता है क्योंकि ऐ आई द्वारा हमे गलत रास्ता बताया जाता है।ऑटोनोमस गाड़ियों में तकनीकी खराबी के कारण गाड़ी बीच सड़क में रुक भी सकती है या कोई हादसा हो भी सकता है।

इसी कारण ऐ आई के बढ़ते प्रभाव के कारण मनुष्यों को आकर्षित कर रहा है परंतु हमें कुछ कार्यों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए।मनुष्यों को अपनी भावनाओं को ऐ आई के सामने प्रकट ना करके अपना काम से काम रखना चाहिए और जितना जरूरत हो उतना ही ऐ आई के साथ बातचीत करनी चाहिए।

Aarush Doshi

VIII-A

मित्रता , एक वरदान

मित्रता की परिभाषा श्रीकृष्ण और सुदामा से सीखे। आजकल हम दिखावट व बनावट में कुछ यूं खो गए कि मित्रता की सही मायने को भी भूल गए। इससे समाज में प्रत्येक व्यक्ति को, खासकर युवा पीढ़ी को सर्वाधिक हानि पहुंच रही है |

मित्र उसे बनाए जो आपको प्रेरणा दे और सदैव आपको आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें। आपकी सभी शंका दूर करें । प्रत्येक संकट में सदैव आपके साथ रहे,अच्छी बातें सिखाए, सत्य व न्याय के रास्ते से भटकने न दे, गलत होने पर सुधार दे, आपका साथ कभी न छोड़े और आप पर भरोसा बनाए रखे हर परिस्थितियों में।

जो असत्य के मार्ग पर चलता है या फिर दूसरों को अनुचित कर्म करने के लिए या अनुचित वाणी बोलने के लिए प्रोत्साहित करता हो वह मनुष्य कभी भी एक उत्तम मित्र नहीं होगा। जो आपको अनुचित मार्ग में ले जाये , जिसके आचार विचार नकारात्मक हैं और केवल मौज मस्ती के लिए आपके साथ जुड़ें रहे,वह मनुष्य परिहार्य हैं।

जो असत्य के मार्ग पर न स्वयं चले न आपको चलने दे, ,आप से कोई भूल, त्रुटी यह स्खलन हो तो आपको रोके और सुधारे।

सहायता हर एक जीव की करें पर दुष्ट, लोभी, मूर्ख, पापी,अधर्मी व स्वार्थी लोग परिहार्य हैं। मित्र हमारे जीवन को दिशा देते हैं। इसलिए हमें बहुत सोच विचार करने के बाद ही अपने मित्र का चुनाव करना हैं।अपना स्वाभिमान व सिद्धांतों को खंडित न होने दे। अपने लक्ष्य व सिद्धांतों पर अडिग रहे। अपना विवेक और चिंतन शक्ति को जागरूक रखें। उचित मार्ग से भटकाने और मौज मस्ती में साथ देने वाले मित्र सदैव मिलेंगे। परंतु सच्चे मित्र बहुत कम मिलेंगे।

इसलिए बहुत सोच विचार पूर्वक अपने मित्रों का चयन करना चाहिए और स्मरण रखना चाहिए कि मित्र कम हो पर सच्चा और अच्छा हो अन्यथा न हो।

Subhadeep Datta
VIII-A

प्राचीन शिक्षा प्रणाली और आधुनिक शिक्षा प्रणाली में अंतर

पहले जमाने के बच्चे और आज के जमाने के बच्चे में अंतर समय के साथ हर पीढ़ी हर पीढ़ी का जीवन बदलता गया है।आजकल हम सब सुनते हैं कि आज कल के बच्चों का पहनावा, खानपान,फैशन ,सामाजिक जीवन और पढ़ाई में पहले के बच्चों से बहुत अंतर देखने को मिलता है। यह लेख कुछ बदलाओं पर प्रकाश डालता है।

भोजन और स्वास्थ्य पहले के बच्चे ज्यादातर सब्जी ,फल, मेवे खाते थे।वे फास्ट फूड शब्द के बारे में भी नहीं जानते थे।इसके कारण वे बीमार नहीं पड़ते थे।

आज के जमाने के बच्चे अधिकतर बर्गर,मैगी,नूडल जैसे फटाफट तैयार जैसे फटाफट तैयार किए जाने जैसे फास्ट फूड खाते हैं।यह सब खाने के कारण बच्चों में उच्च रक्तचाप , मधुमेह, कोलेस्ट्रॉल जैसे समस्याएं अधिक हो रही हैं।फास्ट फूड में अधिक मात्रा में वसा ,मीठी वस्तु और अनेक तरह के रसायन रहते हैं।

खेलकूद और सामाजिक जीवन

पहले के बच्चे हर दिन घर से बाहर निकलकर खेलते थे।वे अनेक तरह के खेल खेलते थे जो उनके शरीर को स्वस्थ रखते थे।जैसे - डंडा, लुका- छिपी।

आजकल के बच्चे इंटरनेट में अधिक समय बिताते हैं।वे अधिकतर समय वीडियो गेम्स और टी.वी.पर बिताते हैं या वाट्सअप,ईमेल,वीडियो कॉलिंग जैसे सोशल मीडिया प्लेटफाम्स पर अपने मित्रों के साथ बात करते हैं।वे अपने कमरे से बाहर भी नहीं निकलते हैं।

शिक्षा और पढ़ने का तरीका

पहले बच्चे स्लेट और चाक का उपयोग करते थे।पढ़ाई का माध्यम किताबें और गुरु हुआ करते थे। बच्चों का ध्यान केवल पढ़ाई में रहता था और वे अधिक परिश्रम करते थे।

आज बच्चों के पास आधुनिक तकनीक का सहारा है।लैपटॉप,स्मार्ट बोर्ड और ऑनलाइन क्लासेज के माध्यम से शिक्षा ज्यादातर डिजिटल हो गई है।इससे बच्चों का ज्ञान बढ़ा है।लेकिन पढ़ाई में तकनीक पर ज्यादातर निर्भर हो रहे हैं।इसकी वजह से बच्चों का ध्यान पढ़ाई से भटक जाता है।

निष्कर्ष

समय के साथ बदलाव आना स्वाभाविक है।तकनीकी विकास और सामाजिक जीवन के कारण आजकल के बच्चों के जीवन में पहले जमाने के बच्चों के जीवन की तुलना में अंतर देखने को मिलता है।

Travis Chen
VIII-B

हिंदी लेखक एवं कवि :योगदान और धरोहर

हिंदी साहित्य में अनेक विशिष्ट लेखकों और कवियों ने अमूल्य योगदान दिया है। इन साहित्यकारों ने न केवल हिंदी भाषा को समृद्ध किया, बल्कि समाज में भी जागरूकता और बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी रचनाएँ आज भी साहित्य प्रेमियों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। उनकी लेखनी ने समाज के विभिन्न वर्गों को नई दृष्टि से देखने और समझने का अवसर दिया। इन साहित्यकारों की धरोहर हिंदी साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और आने वाली पीढ़ियों को भी मार्गदर्शन प्रदान करती है।

प्रेमचंद:- यथार्थवादी साहित्य के जनक

प्रेमचंद को हिंदी साहित्य के युग-निर्माता के रूप में जाना जाता है। उनका असली नाम धनपत राय था, लेकिन वे प्रेमचंद नाम से प्रसिद्ध हुए। उनकी कहानियाँ और उपन्यास समाज के यथार्थ को उजागर करते हैं। "गोदान", "गबन" और "निर्मला" जैसी रचनाओं में उन्होंने गरीबों और पीड़ितों की समस्याओं को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया। उनकी रचनाओं में समाज के कमजोर वर्गों की पीड़ा और संघर्ष को बड़ी संवेदनशीलता के साथ उभारा गया है। प्रेमचंद की रचनाएँ सामाजिक सुधार की भावना से ओतप्रोत हैं, जो आज भी पाठकों को सोचने पर मजबूर करती हैं।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला':- प्रयोगधर्मी कवि

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' हिंदी के उन कवियों में से थे, जिन्होंने कविता को नई दिशा दी। उनकी कविताओं में नवीनता और प्रयोगधर्मिता की झलक मिलती है। "राम की शक्ति पूजा" और "वह तोड़ती पत्थर" जैसी उनकी रचनाएँ समाज के संघर्षों और समस्याओं को गहराई से व्यक्त करती हैं। निराला की कविताओं में उनकी मौलिकता और गहरी संवेदनाएँ झलकती हैं। उनकी शैली ने हिंदी कविता को एक नया आयाम दिया और उन्हें एक विशिष्ट स्थान प्रदान किया। निराला ने सामाजिक मुद्दों को अपनी रचनाओं में केंद्र में रखा और आम जनमानस की आवाज को सशक्त रूप से प्रस्तुत किया।

रामधारी सिंह 'दिनकर':- राष्ट्रकवि

रामधारी सिंह 'दिनकर' को उनकी देशभक्ति और वीरता से भरी कविताओं के लिए राष्ट्रकवि के रूप में जाना जाता है। उनकी रचनाएँ सामाजिक न्याय और राष्ट्रीय चेतना की भावना से भरी हुई हैं। "रश्मिरथी" और "परशुराम की प्रतीक्षा" जैसी रचनाएँ उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं, जो भारतीय साहित्य में अमूल्य स्थान रखती हैं। दिनकर की कविताएँ संघर्ष और क्रांति की भावना को प्रबल करती हैं। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान उनकी रचनाओं ने देशवासियों में जोश और उत्साह भरने का काम किया। उनकी कविताएँ आज भी देशभक्ति की भावना को प्रोत्साहित करती हैं और समाज में सकारात्मक बदलाव की प्रेरणा देती हैं।

हिंदी साहित्य की धरोहर

हिंदी साहित्य की धरोहर इन महान लेखकों और कवियों की रचनाओं में सुरक्षित है। उनकी रचनाएँ आज भी नई पीढ़ी के लेखकों और कवियों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। हिंदी साहित्य के विकास में इन साहित्यकारों का योगदान अमूल्य है। उनकी रचनाएँ न केवल उनके युग की समस्याओं का प्रतिबिंब हैं, बल्कि वे आने वाली पीढ़ियों को भी साहित्य और समाज की गहराई से समझने का मार्गदर्शन प्रदान करती हैं। इस प्रकार, हिंदी साहित्य के लेखक और कवि न केवल समाज का दर्पण बनते हैं, बल्कि वे आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक समृद्ध साहित्यिक धरोहर छोड़ जाते हैं। उनकी रचनाएँ आज भी हमारी सांस्कृतिक और साहित्यिक पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, जो समाज को दिशा और प्रेरणा देती हैं।

Aryan Balmiki
IX-A

Pramit Datta
IX-A

मि. बीस्ट की भारत यात्रा

मि. बीस्ट, जिनका असली नाम जेम्स स्टीफन डोनाल्डसन है और जो दुनिया के सबसे पॉपुलर कंटेंट क्रिएटर हैं, नवंबर 2024 में भारत आए थे। उनके साथ दो और पॉपुलर कंटेंट क्रिएटर, केएसआई और लोगन पॉल भी थे।

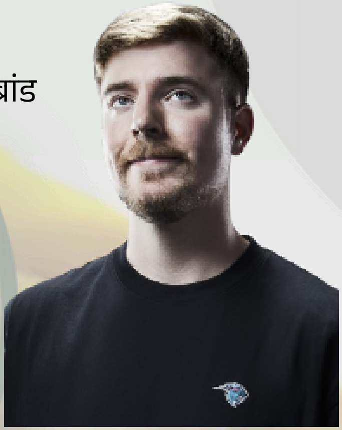

मि. बीस्ट भारत में अपने चॉकलेट ब्रांड "फिस्टेबल्स (Feastables)" और केएसआई (KSI)और लोगन पॉल के एनर्जी ड्रिंक ब्रांड "प्राइम (Prime)" को प्रमोट करने के लिए आए थे।

मि. बीस्ट ने मुंबई के जियो वर्ल्ड ड्राइव मॉल में अपने ब्रांड "Feastables" का लॉन्च किया और भारतीयक्रिएटर्स जैसे कि कैरी मिनाती के साथ भी सहयोग किया। उन्होंने कई इवेंट्स में हिस्सा लिया, जहां उन्होंने अपने फैंस से मुलाकात की।

मि. बीस्ट और लोगन पॉल को रिक्शा की सवारी करते हुए और फैंस में चॉकलेट बांटते हुए देखा गया, जिससे वहां मौजूद सभी लोग बहुत उत्साहित थे।

वे बॉलीवुड सेलेब्रिटीज और उनके बच्चों के साथ तस्वीरें भी लेते नजर आए। मि. बीस्ट ने टी-सीरीज़ के चेयरमैन से भी मुलाकात की, जिससे उनके बीच की दुश्मनी का अंत हुआ।

उनकी यात्रा को लेकर भारतीय फैंस में भारी उत्साह था और उनका जोरदार स्वागत किया गया।

\मि. बीस्ट और लोगन पॉल की यात्रा ने यह साबित किया कि यूट्यूब और सोशल मीडिया का ग्लोबल मार्केट्स पर गहरा असर है। उनकी यात्रा भारत के बढ़ते डिजिटल परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक आदान-प्रदान का प्रतीक बनी और फैन एंगेजमेंट का नया स्तर लेकर आई।

Hamza Azam Khan

IX-A

सेना

धरती का सीना चीरती, जो कदम बढ़ाते हैं,
हवा से बातें करती बंदूकें, जो गर्जन सुनाते हैं।
सीमा पर हर मौसम में जो डटे खड़े रहते,
देश की रक्षा में जो अपनी जान देते।

बर्फीले पर्वत हों या रेगिस्तान की धूप,
हर कठिनाई में खड़े, बनते वीरों का समूह।
तिरंगे की शपथ लेकर जो आगे बढ़ते जाते,
मिट्टी के हर कण से अपना नाता निभाते।

शत्रु के हर वार को जो सहते मुस्कान से,
मौत को मात देते, अपनी पहचान से।
देश का सम्मान ही जिनका जीवन का मकसद,
वीरों की गाथा गाते हैं हम हर उत्सव।

जय हिंद की गूंज से जो देश भर को जगाते,
शौर्य, पराक्रम और साहस का परचम लहराते।
भारतीय सेना, हमारे दिलों की आन हो,
आपकी वीरता पर सदा हमें गर्व महान हो।

Shreeyash Srivastava
X-A

मातृभूमि की खातिर

क्यों बह रहा है खून मेरा,
है क्यों मेरे सर पर जुनून तेरा।
सोचा होगया था पूरा मेरा फर्ज,
जाने अनजाने में भूल गया ,
मातृभूमि का कर्ज।
कर्ज पूरा करने के लिए दे दूंगा यह जान भी,
वह जान भी क्या जान जान है
जो न हो मातृभूमि का सम्मान।
देश बचाने की खातिर मैं खुद से ही लड़ जाऊंगा,
सबसे ऊंचा रहे तिरंगा मैं उस पर मर मिट जाऊंगा।
देश की रक्षा से बढ़कर न कोई भी कर्म है,
देशभक्ति से तो बढ़कर न कोई भी धर्म है।
देश की मिट्टी से है
मेरा यह जिस्म बना,
देश की मिट्टी में ही हो जाएगा यह फना।
ऐ वतन मेरे वतन कर मुझ पर बस इतना जतन ,
जब भी मरूं
दे दे मुझे
यह तिरंगा
बनाकर
मेरा कफ़न।

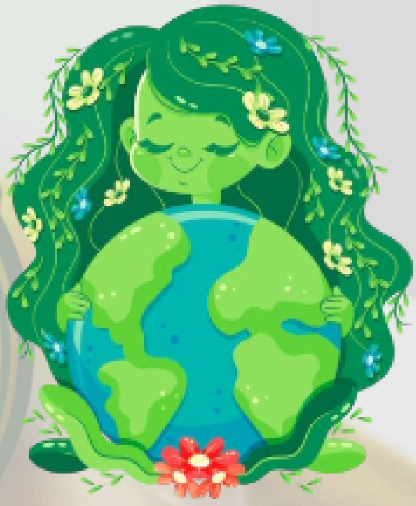

Rishith Shukla
X-B

खेल में जुनून और आक्रामकता का अद्भुत संगम

खेल का मैदान... जहां सिर्फ मुकाबला नहीं होता, बल्कि हर पल एक कहानी लिखी जाती है। यहां खिलाड़ियों के भीतर का जुनून और उनकी आक्रामकता खेल को एक साधारण प्रतियोगिता से एक भावनात्मक अनुभव बना देती है। फुटबॉल और क्रिकेट जैसे खेल तो मानो इन भावनाओं के सबसे बड़े रंगमंच हैं, जहां हर कदम पर जज्बातों का तूफान नजर आता है।

फुटबॉल का मैदान एक युद्धक्षेत्र सा लगता है, जहां हर खिलाड़ी अपने टीम के लिए जीत का परचम लहराने को बेचैन है। जब एक खिलाड़ी गेंद के साथ दौड़ता है, तो उसकी हर सांस में अपने देश का मान और अपनी टीम की शान छुपी होती है। हर पास, हर टैकल, और हर गोल करने की कोशिश में उसकी आंखों में चमकती उम्मीद और दिल में दौड़ता जुनून साफ झलकता है। और जैसे ही गेंद नेट को छूती है, पूरा स्टेडियम जोश से गूंज उठता है।

क्रिकेट, जिसे "जेंटलमेन का खेल" कहा जाता है, उसमें भी आक्रामकता और जुनून की कमी नहीं। बल्लेबाज के बल्ले से निकला हर छक्का और गेंदबाज की शानदार यॉर्कर दर्शाती है कि यह सिर्फ स्कोर बनाने या विकेट लेने का खेल नहीं है, बल्कि एक सम्मान और आत्मगौरव की लड़ाई है। खासकर जब भारत और पाकिस्तान का मैच होता है, तब हर खिलाड़ी के भीतर का योद्धा जाग जाता है। उनके चेहरे की भावनाएं, मैदान पर हर कदम और आक्रामक प्रतिक्रियाएं खेल के प्रति उनके समर्पण को दर्शाती हैं।

खेलों में यह आक्रामकता और जुनून केवल व्यक्तिगत प्रदर्शन तक सीमित नहीं रहती, यह टीम को एकजुट करती है और दर्शकों को प्रेरित करती है। ये भावनाएं खेल को महज मनोरंजन से बढ़कर एक जीवंत अनुभव बना देती हैं। यही वजह है कि खेल हमें जीने का एक नया नजरिया सिखाते हैं —जुनून के साथ लड़ना, हार न मानना और अंत में दिल से जश्न मनाना।

Chantan Shaw

XI-A

वन महोत्सव

वन महोत्सव, यह आज के समय में केवल दो शब्द नहीं बल्कि आज के समय के स्तंभ है। हमारी पृथ्वी को सुंदर और जीवन को हरा-भरा बनाए रखने में वनों का महत्वपूर्ण योगदान है । इन्हीं वनों की सुरक्षा बनाए रखने के लिए और लोगों को वनों और पेड़ों का महत्व याद दिलाए रखने के लिए इस त्यौहार का श्रीगणेश हुआ था ।

वन महोत्सव हमारे देश में मनाए जाने वाला एक महत्वपूर्ण त्यौहार है । यह त्यौहार जुलाई के पहले सप्ताह में मनाया जाता है । वन हमें ऑक्सीजन प्रदान करते हैं , जीव जंतुओं को आवास प्रदान करते हैं,आदि ।

वन महोत्सव की शुरुआत 1950 में हुई थी और इस नेक त्यौहार में अपना योगदान देते हुए हमारे स्कूल सेंट जोसेफ कॉलेज भी हर साल जुलाई के पहले सप्ताह में इस त्यौहार के प्रति जागरूकता फैलती है । हमारे स्कूल एक विशेष सभा का आयोजन करता है जिसमें हम अपने विद्यार्थियों को पेड़ की कीमत और उनके महत्त्व से उन्हें जागृत करते हैं । सभा के पश्चात हमारे आदरणीय प्रधानाचार्य वृक्षारोपण करते हैं । इस सप्ताह हम सब विद्यार्थी एक - एक पेड़ के बीज गमले में रोप कर अपना योगदान देते हैं ।

हमारी कक्षाओं में भी वन महोत्सव के बारे में हमें और अधिक जानकारी मिलती है जिससे हम अपने साथ-साथ समाज में भी जागरूकता फैलाते हैं।

वन महोत्सव हमें प्रकृति के साथ जुड़ने और वन के महत्त्व को समझने का एक अवसर प्रदान करता है । इसलिए हम इस त्यौहार मेंअपना योगदान दें और अपने भविष्य को सुरक्षित और स्वस्थ बनाने के लिए काम करें । वन महोत्सव का संदेश है -

"वृक्ष लगाओ जीवन बचाओ" !

Harshit Bihani
XI-A

सेंट जोसेफ कॉलेज में ७८वां स्वतंत्रता दिवस समारोह

स्वतंत्रता दिवस मनाते हुए, स्वतंत्रता सेनानियों की बहादुरी का सम्मान करते हुए, तथा न्याय, समानता और आजादी को कायम रखते हुए,१५ अगस्त, २०२४ को सेंट जोसेफ कॉलेज ने ७८वां स्वतंत्रता दिवस बड़े उत्साह और देशभक्ति के साथ मनाया। कार्यक्रमों की शुरुआत प्रधानाचार्य के द्वारा ध्वजारोहण समारोह से हुई, जिसमें छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों ने भाग लिया।
ध्वजारोहण के बाद छात्रों ने देशभक्ति की कविताएं जैसे "पुष्प की अभिलाषा", "सरफरोशी की तमन्ना" सुनाई एवं देश के बहादुर स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को याद किया और उन्हें सम्मानित करते हुए श्रद्धांजलि दी।

मध्य कक्षा के छात्रों ने देशभक्ति की भावना को दर्शाते हुए, एक अलौकिक नृत्य प्रदर्शन से दर्शकों को उल्लासित कर दिया। इसके पश्चात वरिष्ठ कक्षा के छात्रों ने लोकप्रिय बंगाली गीत पर एक मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किया, जिसमें देश की समृद्धि और संस्कृति को दर्शाया गया। छात्रों ने एक विशेष नृत्य भी प्रस्तुत किया, जिसमें हमारे देश के सीमा रक्षक और अपने प्राणों की आहुति देने वाले शहीदों को श्रद्धांजलि दी गई। यह प्रदर्शन भारत की सेना के प्रति सम्मान का प्रतीक था।

स्वतंत्रता और एकता के विशेष मूल्य को छात्रों द्वारा भाषण में कहा गया। हमारे विद्यालय के गायकों ने देशभक्ति गीत जैसे "मां तुझे सलाम", "तेरी मिट्टी", "मेरे देश की धरती" इत्यादि की भावपूर्ण प्रस्तुति से जश्न के माहौल को और उत्साह से भर दिया। इस कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण एक शानदार फैशन शो था, जिसमें छात्रों ने भारत के सभी राज्यों की पारंपरिक पोशाक और सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित किया। समारोह का समापन प्रधानाचार्य के सुंदर विचारों के साथ हुआ, जिसमें उन्होंने छात्रों को देशभक्ति और राष्ट्रीय एकता के मूल्यों को बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित किया। अंत में हम सभी ने खड़े होकर तिरंगे को सम्मान दिया और राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन किया।

अतःसेंट जोसेफ कॉलेज में ७८वें स्वतंत्रता दिवस समारोह ने छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों के बीच राष्ट्रीय गौरव और एकता की भावना को बढ़ावा दिया।

Vansh Shah
XI-B

समाज में सबका समान अधिकार है

धार्मिक , परोपकारी ,सांस्कृतिक, वैज्ञानिक ,राजनीतिक ,देशभक्ति या अन्य उद्देश्यों के लिए एक साथ जुड़े व्यक्तियों का संगठित समूह समाज कहलाता है।सामाजिक समानता एक ऐसी स्थिति है जिसमें समाज के सभी व्यक्तियों को समान अधिकार और स्वतंत्रता प्राप्त होती है।समानता का मतलब केवल कानून के समक्ष बराबरी नहीं बल्कि सामाजिक,आर्थिक और सांस्कृतिक संदर्भ में भी समान अवसर प्रदान करना है।जैसे महात्मा गांधी जी ने कहा था कि हमारी सबसे बड़ी कमजोरी है हार मानना।सफल होने का सबसे निश्चित तरीका है हमेशा एक बार और प्रयास करना ।यह विचार हमें प्रेरित करता है कि सभी व्यक्तियों को समान अधिकार मिलना चाहिए।ताकि वे अपनी पूरी क्षमता का विकास कर सके।इस संसार में समाज की भावना तब प्रकट होती है जब समाज के हर एक व्यक्ति को उसकी क्षमता और योग्यता के अनुसार मान्यता मिले।जब ईश्वर ने मनुष्य को समानता के अनुसार धरती पर भेजा है तो हम मनुष्य कौन होते हैं जो लोगों को जाति,रंग के आधार पर अधिकार पाने के लिए विभाजित करें।जब तक समाज में हर व्यक्ति को समान अधिकार नहीं मिलता तब तक हम सच्ची समानता की दिशा में हम नहीं बढ़ सकते।
अभी हाल में आर जे कर मेडिकल कॉलेज में जो घटना घटी है वो दिखाती है कि समाज में समानता लुप्त सी हो गई है।भारत को आज़ादी के अठहत्तर साल हो गए हैं ।फिर भी भारतवासियों को समानता के लिए लड़ना पर रहा है।अगर लड़के रात - भर घूम कर देर से घर पहुंचे तो वह सही है परंतु महिलाएं काम से देर रात घर से बाहर रहें तो उनके साथ बलात्कार किया जाता है और कह दिया जाता है कि उनको देर रात तक घर से बाहर नहीं रहना चाहिए था ।यह किस तरह की समानता हुई ?
आज कल लोगों को जाति ,रंग ,धर्म और पहनावे से भेदभाव किया जा रहा है।क्या यही समानता की निशानी है? डॉ० भीम राव अंबेडकर ने ठीक ही कहा था कि असमानता किसी भी समाज की आत्मा को मार देती है।यह बात सच है कि असमानता और भेदभाव न केवल समाज के विकास को रोकता हैं । बल्कि समाज में तनाव और संघर्ष को जन्म देते हैं।
समाज में सबका समान अधिकार तब ही हो पाएगा जब किसी भी व्यक्ति को जाति,धर्म,रंग या आर्थिक स्थिति के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाए।अगर लोगों के बीच में समानता होगा तो मानवता की भावना बढ़ने लगेगी।लोग एक दूसरे को सम्मान की नजरों से देखेंगे ।निष्कर्ष में मैं यही बोलना चाहूंगा समाज में सभी व्यक्तियों को अधिकार मिलना आवश्यक है ताकि हर व्यक्ति को समान स्वतंत्रता का अधिकार मिले तब ही भारत देश की और उन्नति हो सकती है।

Dev Mehra
XII-A

मृत्यु और कर्म

मैं मृत्यु हूं, मैं काल हूं
मैं दक्षिण का दिक पाल हूं
मैं तेरे जीवन का चालक
मैं प्राणों का दाता हूं
मैं यमराज, मैं सूर्यपुत्र , मैं यमदूत कहलाता हूं ||

सुना है आजकल कलयुग में लोग मुझे कुछ भूल गए
कुछ को अब हम याद रहे तो कुछ ने हमें नकार दिया
कुछ ने अपने आयु पर तो कुछ ने बल पर नाज किया
कुछ ने अपने जीवन को अनंत अमर है मान लिया ||

यही उम्र है जान मुझे तू
वक्त गुजरा,पछताएगा
मन के भीतर पाप भरे हैं, भले नजर न आए वो
अंत समय जब प्राण निकल यमलोक में खींचा जाएगा
तब तेरे हर कर्मो का प्रभाव पता चल जाएगा ||

जोश- जोश में गलत कदम कुछ तूने ऐसे मोरे हैं
अपने अंदर राज रखा सब दुनिया को कुछ ज्ञात नहीं
मुझसे कर्म कुछ छिपा नही, मुझसे न कुछ राज रहा
अंधकार के रास्तों से तेरा यहीं पर आना है
मेरे समक्ष उपस्थित रह ,तुझे सब सच बताना है
यहाँ पर तेरे हर कर्म ,हर लम्हें याद आएगा
तब तेरे हर कर्मो का प्रभाव पता चल जाएगा |

Prashant Kumar Pandey
XII-B